The Only Security Is Learning to Live without Inward Security	आंतरिक सुरक्षा के बिना जीना सीखना एकमेव सुरक्षा है
It is only when we do not seek inward security that we can live outwardly secure...	जब हम आंतरिक सुरक्षा की चाहत नहीं करते, केवल तभी हम बाहरी तौर भी सुरक्षित रह सकते हैं...
Using another as a means of satisfaction and security Is not love. Love is never security; love is a state in which there is no desire to be secure; it is a state of vulnerability; it is the only state in which exclusiveness, enmity, and hate are impossible. In that state a family may come into being, but it will not be exclusive, self-enclosing.	किसी दूसरे को अपनी संतुष्टि और सुरक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग करना प्रेम नहीं है। प्रेम कभी सुरक्षा नहीं होता, वह तो एक ऐसी अवस्था है जहां सुरक्षित होने की कोई चाहत ही नहीं होती, यह तो खिड़की-दरवाज़े खुले रखने की अवस्था है, यह ऐसी एकमेव अवस्था है जिसमें अलगाव, वैरभाव, और घृणा का होना असंभव होता है। इस अवस्था में भी परिवार का अस्तित्व हो सकता है, परंतु वह परिवार वर्जनकारी नहीं होगा, अपने ही खोल में बंद नहीं होगा।
CHAPTER FOUR	**अध्याय चार**
Nature and Earth	**प्रकृति और पृथ्वी**
-1-	-१-
What Is Our Relationship with Nature?	प्रकृति से हमारा क्या संबंध है।
Sir, I do not know if you have discovered your relationship with nature. There is no "right" relationship, there is only the understanding of relationship. Right relationship implies the mere acceptance of a formula, as does right thought. Right thought and right thinking are two different things. Right thought is merely conforming to what is right, what is respectable, whereas right thinking is movement, it is the product of understanding, and understanding is constantly undergoing modification, change. Similarly there is a difference between right relationship and understanding our relationship with nature. What is your relationship with nature?--nature being the rivers, the trees, the swift-flying birds, the fish in the water, the minerals under the earth, the	महोदय, मुझे नहीं मालूम कि आप प्रकृति से अपना संबंध जान पाये हैं या नहीं। 'सही' संबंध जैसी कोई चीज़ नहीं होती, होती है केवल संबंध की समझ। सही संबंध में किसी पूर्वनिर्धारित सूत्र को यथावत् स्वीकार किया जाना निहित रहता है--सही विचार की तरह। सही विचार और सही सोचना दो भिन्न बातें हैं। सही विचार केवल समीचीन का, सम्माननीय का अनुकरण है, जबकि सही सोचना गतिशीलता है, यह समझ की उपज होती है और समझ में सदैव संशोधन और परिवर्तन होता रहता है। इसी प्रकार प्रकृति से आपके सम्यक संबंध और संबंध की समझ में अंतर है। आपका प्रकृति के साथ क्या संबंध है?--प्रकृति जिसमें नदियां, वृक्ष, उड़ान भरते पक्षी, जल में तैरती मछली, इसके भीतर की धातुएं, झरने, छोटे-छोटे तालाब--ये सभी सम्मिलित हैं। इनके साथ आपका संबंध क्या है? हममें से अधिकांश लोग इस संबंध से

waterfalls and shallow pools. What is your relationship to them? Most of us are not aware of that relationship. We never look at a tree, or if we do, it is with a view of using that tree-- either to sit in its shade or to cut it down for lumber. In other words;, we look at trees with a utilitarian purpose; we never look at a tree without projecting ourselves and utilizing it for our own. convenience.	अवगत नहीं हैं। हम कभी किसी वृक्ष को ध्यानपूर्वक नहीं देखते, और देखते भी हैं तो उस वृक्ष की उपयोगिता को अपनी दृष्टि में रखकर--या तो उसकी छांव में बैठने के लिए या इमारती लकड़ी हेतु उसे काटने के लिए। दूसरे शब्दों में कहें तो हम वृक्ष को केवल उपयोगिता के उद्देश्य से ही देखते हैं। हम किसी वृक्ष को उस पर स्वयं को प्रक्षेपित किये बिना, अपनी सुविधा के लिये उसका उपयोग करने की भावना के बिना नहीं देख पाते।
-2-	-२-
Do We Love Our Earth, or Just Use It as We Do Each Other?	क्या हम इस पृथ्वी से प्रेम करते हैं या केवल इसका बस उपयोग करते हैं जैसे आपस में एक दूसरे का
We treat the earth and its products in the same way. There is no love of earth, there is only usage of earth. If one really loved the earth, there would be frugality in using the things of the earth. That is, sir, if we were to understand our relationship with the earth, we should be very careful in the use we made of the things of the earth. The understanding of one's relationship with nature is as difficult as understanding one's relationship with one's neighbor, wife, and children. But we have not given a thought to it, we have never sat down to look at the stars, the moon, or the trees.	हम पृथ्वी और इसके उत्पादों को एक ही नज़र से देखते हैं। हम पृथ्वी को प्रेम नहीं करते, केवल उसका उपयोग करते हैं। यदि हम वास्तव में इससे प्रेम करते तो इसकी चीज़ों का उपयोग करने में मितव्ययिता बरतते। अर्थात यदि हम पृथ्वी के साथ अपने संबंध को समझ गये होते, तो उसकी चीज़ों का उपयोग बहुत सावधानी से करते। प्रकृति के साथ अपने संबंध को समझना उतना ही कठिन है जितना अपने पड़ोसी, अपनी पत्नी व बच्चों के साथ अपने संबंधों को समझ पाना। परंतु हमने कभी इस विषय में सोचा नहीं है। कभी हमने फुरसत से बैठकर तारों को, चंद्रमा को, वृक्षों को निहारा नहीं है।
We are too busy with social or political activities. Obviously, these activities are escapes from ourselves, and to worship nature is also an escape from ourselves. We are always using nature, either as an escape or for utilitarian ends—we never actually stop and love the earth or the things of the earth. We never enjoy the rich fields, though a we utilize them to feed and clothe ourselves. We never like to till the earth with our hands—we are ashamed to work with our hands.	हम अपनी सामाजिक या राजनैतिक गतिविधियों में बुरी तरह व्यस्त रहते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि ये गतिविधियां स्वयं से पलायन होती हैं और प्रकृति को पूजना भी स्वयं से पलायन करना ही है। हम सदैव प्रकृति का इस्तेमाल करते हैं--पलायन के या उपयोगिता के उद्देश्य से--हम सचमुच कभी इसके साथ ठहरते नहीं हैं और न ही हमें पृथ्वी या इसके पदार्थों से लगाव होता है। हम कभी लहलहाते खेत का आनंद महसूस नहीं करते--भले ही अपना भोजन और वस्त्र पाने के लिए उन खेतों का ही उपयोग करते रहते हैं। हम कृषिकार्य के लिये मिट्टी में अपने हाथ नहीं डालते--हमें अपने हाथों से काम करने में शर्म आती है।

-3-	–३–
Maps Are Political Opinions, Not Facts: the Earth Is Not 'Yours' and 'Mine'	मानचित्र राजनैतिक धारणाएं हैं––तथ्य नहीं : पृथ्वी 'आपकी' या 'मेरी' नहीं है
So, we have lost our relationship with nature. If once we understood that relationship, its real significance, then we would not divide property into yours and mine; though one might own a piece of land and build a house on it, it would cease to be 'mine' or 'yours' in the exclusive sense—it would be more a means of taking shelter. Because we do not love the earth and the things of the earth but merely utilize them, we are insensitive to the beauty of a waterfall, we have lost the touch of life, we have never sat with our backs against the trunk of a tree; and since we do not love nature, we do not know how to love human beings and animals.	इस प्रकार प्रकृति के साथ हम अपना संबंध खो बैठे हैं। यदि एक बार हम इस संबंध को समझ लें, इसके महत्त्व को समझ लें, तो फिर हम जमीन–जायदाद को 'तेरे–मेरे' में नहीं बांटेंगे––तथापि हो सकता है कि किसी के पास कोई एक भूखंड हो जिस पर वह भवन निर्माण कर ले, परंतु यह विशिष्ट अर्थ में 'तेरा–मेरा' नहीं रह जाएगा। बल्कि वह केवल सिर छुपाने का आसरा बन जाएगा। चूंकि हम पृथ्वी को अथवा इसकी चीज़ों को प्रेम नहीं करते, उनका बस उपयोग करते हैं, इसीलिए झरनों के सौंदर्य के प्रति हम उदासीन हो गये हैं, हमारा जीवन से मानो सरोकार ही नहीं रह गया है, हम किसी वृक्ष के तने से पीठ सटाकर कभी नहीं बैठते––और चूंकि हम प्रकृति को प्रेम नहीं करते, इसीलिए यह भी नहीं जान पाते कि मानव को और पशु–पक्षियों को प्रेम कैसे किया जाए।
-4-	–४–
We Are Caretakers, Each of Us Temporary at That	हम तो रखवाले हैं, और वह भी अस्थायी
It does not mean that you cannot use the earth, but you must use the earth as it is to be used. Earth is there to be loved and cared for, not to be divided as 'yours' and 'mine'. It is foolish to plant a tree; in a compound and call it 'mine'.	इसका तात्पर्य यह नहीं है कि आप पृथ्वी का प्रयोग नहीं कर सकते। जिस प्रकार यह प्रयोज्य है उस प्रकार तो इसका प्रयोग आपको करना ही चाहिये। पृथ्वी इसलिए है कि उससे प्रेम करें, उसकी देखभाल करें, 'तेरे' मेरे' में बांटें नहीं। किसी अहाते में कोई वृक्ष लगाना और उसको 'मेरा' कहना मूर्खता ही है।
CHAPTER FIVE	**अध्याय पांच**
Marriage: Love and Sex	**विवाहः प्रेम और यौनाचार**
-1-	–१–
Is Marriage Mutual Use?	विवाह क्या परस्पर प्रयोग है?